देश की शान, कृषि कर्मठ महिला किसान

राष्ट्रीय महिला किसान दिवस: 15 अक्टूबर, 2026

भारत कृषि प्रधान देश है। 70% आबादी कृषि व्यवसाय पर आधारित है। इसलिए खेती करने वाले किसान को देश की रीढ़ माना जाता है। जीवन की तीन मूलभूत आवश्यकताओं- रोटी, कपड़ा और मकान में पहली आवश्यकता रोटी की पूर्ति करने वाला यही किसान ही है। यह तो सर्वविदित है ही कि रोटी सबको चाहिए चाहे वह गरीब हो या अमीर, नेता हो या अभिनेता, राजा हो या रंक, गृहस्थ हो या निवृत्त। जब हम किसान शब्द कहते हैं या सुनते हैं तो हमारे मानस पटल पर कंधे पर हल उठाये, बैलों को हाँकते हुए पुरुष किसान की छवि उभरती है, महिला किसान की नहीं। कृषि संबंधी व्यवसाय और आर्थिक प्रगति में महिला किसान के योगदान को हम जानने का प्रयास करेंगे।

प्राचीन काल से ही कृषि क्षेत्र में महिलाओं की बराबर की भागीदारी रही है। फिर चाहे वह बागवानी हो दुग्ध उत्पादन या पशु पालन- सभी क्षेत्रों में अपना नाम महिला किसान ने दर्ज कराया है। बीज की बुवाई से लेकर निराई-गुड़ाई, कटाई और फसल के भंडारण तक के सफर में महिला किसान का योगदान भुलाया नहीं जा सकता और आज तो वह स्वयं ट्रैक्टर चलाकर घर और खेत की दूरी को बड़ी सुगमता से माप रही है। फिर भी महिला किसान मुख्य धारा से गायब नजर आ रही है।

जैसे बीज बोने से पहले खेत में हल चलाना आवश्यक है। वैसे ही हल चलाने के पहले अपने मन की मरुभूमि में भी प्रसन्नता, उमंग-उल्लास व खुशी का संचार होना बहुत आवश्यक है। इसके लिए महिलाएं मंगल गीत गाकर, पूजा-अर्चना करके प्रकृति और प्रकृतिपति दोनों का आवाहन करती है। कृषि यंत्रों, गाय-बैलों और प्रकृति की पूजा से संबंधित अनेक त्यौहार भारत के विभिन्न प्रदेशों में मनाए जाते हैं जो भरपूर पैदावार के लिए महिलाओं द्वारा किए गए प्रथम प्रयासों में से है।

केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय भारत सरकार द्वारा हर वर्ष 15 अक्टूबर को महिला किसान दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस दिन समूचा भारत महिला किसानों को उनके साहस, धैर्य, कर्मठता और खेती में समर्पण भाव को सलाम करता है।

एक महिला चूल्हे पर रोटी पकाना ही नहीं वह खेत में अन्न उगाना भी जानती है। जैसे रोटी में अपना स्नेह व वात्सल्य का रस भर देती है जो सूखी रोटी भी सत पकवानी से कम नहीं लगती। उसी प्रकार खेत में भी बीज को बोने के साथ-साथ अपने अन्नपूर्णा मां के स्वरूप का भाव भी खेत में बिखेर देती है, जिसमें बीज के अंकुरण के साथ-साथ ही उसका स्नेहमयी मां का वात्सल्य भी अंकुरित होता जाता है जो समय के साथ फसल पकने पर उस बीज में समाहित हो जाता है। फिर उसी अन्न को अपने पालनहार हाथों से पका कर सबको खिलाती है तो उस

के आगे फाइव स्टार होटल का खाना भी बेस्वाद लगने लगता है। प्रकृतिपति का भी आवाहन करते हुए वह यही कहती है कि कण भर बो रही हूं, मुझे मण भर देना। मुट्ठी भर बो रही हू, कोठी भर देना।

खेती बागवानी का व्यवसाय प्रकृति व मौसम पर आधारित होने के कारण किसान को आंधी-तूफान, अतिवृष्टि -अनावृष्टि, ओलावृष्टि आदि की मार झेलनी पड़ती है। तो कई बार पुरुष के माथे पर चिंता की रेखाएं उभर आती हैं। ऐसे संकट के समय वह धैर्य और हिम्मत को टूटने नहीं देती है। एक मनोचिकित्सक की भांति पूरे परिवार का संबल बन जाती है।

एक महिला किसान घर में सबसे पहले उठकर घर के दैनिक कार्य बच्चों, बुजुर्गों, मेहमानों व पालतू पशुओं का कार्य निपटा कर सुबह सवेरे खेत में पहुंच जाती है। वहां भी पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर बिना थके कार्य में जुट जाती है । शाम को भी वापस घर लौटने पर पुरुष भले सुस्ताये परंतु वह फिर दूध दुहना, खाना पकाना आदि कार्यों में लग जाती है।

महिला के कार्य में स्वच्छता

विधाता ने महिला में स्वच्छता का गुण विशेष रूप से भरा है। चाहे पशुओं का दूध दुहना हो या तबेले की साफ सफाई या अनाज की चुनाई वह सब कार्यों में स्वच्छता को प्राथमिकता देती है। अन्न को देवता समझ उसे झूठा नहीं छोड़ना और फसल का पहला हिस्सा मंदिर, आश्रम, गौशाला में दान करना यह उसकी भगवान के प्रति और प्रकृति के प्रति कृतज्ञता जाहिर करता है।

क्या जीवन का लक्ष्य केवल पेट भरना है

प्रतिदिन केवल मेहनत करना ही मानव जीवन का उद्देश्य नहीं है। कमाना,पकाना, खाना खिलाना और सोना यह तो एक छोटे से छोटा जीव चीटी भी बखूबी कर लेती है। फिर विधाता की सर्वश्रेष्ठ रचना सृष्टि का सबसे समझदार प्राणी होने के नाते से मानव ने भी मात्र इतना ही किया तो कौन सा कमाल कर दिखाया। इसलिए खेती-किसानी के साथ-साथ अपने जीवन को ऊंचे से ऊंचे मूल्यों में सर्वगुणों में परिपूर्ण बनाने का लक्ष्य भी साथ रखना चाहिए। जैसे किसान कृषि क्षेत्र में उपज की गुणवत्ता का ध्यान रखता है ताकि मंडी में उसका ऊंचा भाव मिल सके। उसी प्रकार अपने जीवन में विचार, वाणी और कर्म की भी उच्च क्वालिटी बनाने पर ध्यान दिया जाए तो जीवन निरन्तर देवत्व की ओर बढ़ता जाता है। जीवन का अंतिम लक्ष्य सुख, शांति, प्रेम व मान-सम्मान पाना ही तो है जो इन सद्गुणों व सतकर्मों से ही संभव है।

कृषि क्षेत्र में आध्यात्मिकता

वैसे तो आज के समय में जीवन चुनौतियों से भरा जीवन है लेकिन कृषि क्षेत्र की चुनौतिया कहीं अधिक दिखाई पड़ती है। फसल की बुवाई से लेकर किसान के घर तक उपज का लाभ

पहुंचने का सफर बहुत ही जोखिम भरा है। इसलिए भय, चिंता, तनाव का माहौल हर समय बना ही रहता है। जब प्रकृति के बदले मिजाज से किसान की आंखों के सामने उसकी सारी मेहनत मिट्टी में मिल जाती है तो उसका धैर्य जवाब दे जाता है। कहां-कहां किसान आत्महत्या करने तक की बात भी सोचने लग जाता है। ऐसी परिस्थिति में महिला व पुरुष दोनों ही कुछ समय निकालकर अपने आत्मस्वरूप को, अपने मूल गुण व शक्तियों को पहचान कर उनका चिंतन करें शास्वत सत्यों का बोध करें तो विपरीत परिस्थितियों में भी हिम्मत व धैर्य बनाए रखा जा सकता है। इसे ही आध्यात्मिकता कहा जाता है।

दूसरे शब्दों में इसको ही राजयोग मेडिटेशन भी कहा जाता है। महिला किसान घर में भोजन बनाते समय, दूध दुहते समय, खेती में काम करते समय शुद्ध सात्विक विचारों की तरंगे फैलाती रहे तो उसके चारों तरफ इन शुद्ध विचारों का आभामंडल निर्मित हो जाता है जो महिला को शांति-शक्ति व सुरक्षा प्रदान करता है। इसे ही कर्म योगी जीवन भी कहा जाता है। जैसे-जैसे महिला किसान का आत्म निश्चय व परम सत्ता के कल्याणकारी स्वरूप पर दृढ़ निश्चय होता जाता है तो पहले से ही उस में विद्यमान कर्मठता, धीरज, प्रकृति प्रेम, त्याग, समर्पण भाव आदि सद्गुणों में और ही निखार आ जाता है। या यूं कहें कि इन सब गुणों का दिव्यीकरण होने लगता है जो उसके संपूर्ण जीवन की दशा व दिशा ही बदल देते हैं। आंतरिक गुणों का विकास होने से वह खेत-खलिहान, घर- परिवार, बाल-बच्चों के बीच में अपेक्षित समन्वय स्थापित करने में सफल हो जाती है क्योंकि अपने एक हाथ में दराती (फसल कटाई का यंत्र) और दूसरे हाथ में पराती (आटा गूंधने का बर्तन) संभालने वाली दो भुजा धारी लक्ष्मी तो वह पहले से है ही लेकिन अभी उसे कर्मयोगी और सशक्त योगी की दो भुजाएं और जोड़कर चार भुजा धारी महालक्ष्मी बनना होगा तभी जीवन में धन-धान्य, खुशी व आनन्द की बरसात होगी।

महिला किसान की राहों की मुश्किलें

सबसे पहली बाधा तो स्वयं उसी के द्वारा पैदा हो जाती है जब वह अपने को कमजोर, अबला और पुरुष की भेंट में स्वयं को दोयम दर्जे की समझने लगती है या वह कोई नशे की आदी है, आलसी है, शक्की स्वभाव की है, बदचरित्र है, डरपोक है, अनपढ़ है तो यह अवगुण उसकी अपनी उन्नति में बाधक बन जाते हैं।

कार्य क्षेत्र पर महिलाओं के साथ छेड़छाड़, जातीय और लैंगिक भेदभाव, समय पर मजदूरी का भुगतान नहीं होना, घरेलू हिंसा, उसका स्वयं भी जादू टोनों में विश्वास और उसकी अनपढ़ता आदि उसके विकास के रास्ते की वह कंटीली झाड़ियां हैं जिन्हें काटने के लिए अब वह जी जान से जुटी हुई है। इसके लिए किसान महिलाएं संगठित होकर अपनी आवाज उठाएं और अन्याय के विरुद्ध खड़ी हो जाए तो संगठित प्रयास उन्हें सफलता दिलाएगा। जैसे स्वयं सहायता समूह के संगठित प्रयास ने उन्हें आत्मनिर्भर बना दिया, आर्थिक गुलामी की बेड़ियों को तोड़ कर बाहर आ रही हैं, ऐसे ही गांव की महिलाएं संगठित होकर गांव-गांव में एक राजयोग केंद्र खुलवाएं जहां पर ध्यान मेडिटेशन से अपने को सशक्त बना सकें। जिसके माध्यम से वे अपने

को इतना सशक्त बना लें कि समाज से मिलने वाले भेदभाव व अन्याय वाले रवैये के देश से अपने को बचा सके। इसके लिए प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय का कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग हर संभव सहयोग के लिए तत्पर है।

यौगिक कृषि द्वारा आशा की नई किरण

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के कृषि एवं ग्राम विकास प्रभाग ने विचारों की शुद्धता व सकारात्मकता का प्रयोग खेती पर करके एक नया फार्मूला विकसित किया है जिसे शाश्वत यौगिक खेती नाम दिया है। यदि हमारी किसान बहनें इसका महत्व समझ जाएं और थोड़ा समय निकालकर यौगिक खेती पद्धति को सीख लें तो जो अन्न-फल, शाक- सब्जी, दूध-दही व दालों आदि का उत्पादन करती हैं वह अपेक्षाकृत उच्च गुणवत्ता वाले होंगे। इससे उनकी केवल आमदनी में ही बढ़ोतरी नहीं होगी अपितु आपसी रिश्ते भी सुमधुर होंगे और घर-परिवार भी आनंद व उल्लास के फूलों से महकती बगिया बन जाएगा। देश के विभिन्न प्रदेशों में हजारों किसान इस खेती को अपनाकर सुख व समृद्धि के नए आयाम स्थापित कर रहे हैं।

एक महिला क्योंकि वह परिवार की धुरी है, घर व खेत के बीच की कड़ी है, उसके यौगिक खेती सीखने व करने से कृषि उपज तो बढ़ेगी ही साथ ही उसके परिवार-रिश्तेदार और उसका स्वयं का अपना जीवन भी स्वस्थ, प्रसन्नचित्त, आनन्द-उल्लास से भरपूर बन जाएगा। तब ही ऐसी महिला किसान के लिए हर दिल से निकलेगा

खुदा ने इसे बड़ी फुर्सत में बनाया होगा !!
ऐसी अनोखी मिट्टी न जाने वह कहां से लाया होगा !! ओम शान्ति

नोट: 15 अक्टूबर, राष्ट्रीय महिला किसान दिवस के रूप में भी मनाया जाता है जिसका मुख्य उद्धेश्य कृषि विकास, ग्रामीण विकास, खाद्य सुरक्षा तथा ग्रामीण गरीबी उन्मूलन में महिलाओं के महत्व के प्रति लोगों को जागरूक करना है।